



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
IJAR 2015; 1(5): 301-303
www.allresearchjournal.com
Received: 10-02-2015
Accepted: 15-03-2015

Sarwejeet Meena
Lecturer, Department of
Sociology, Govt. College,
Kotra, Udaipur, Rajasthan,
India

नगरीय विकास में सामाजिक समावेश की आवश्यकता

Sarwejeet Meena

सारांश:

आजकल नगरीय विकास एक गंभीर चुनौती है जो संपूर्ण विश्व में देखी जा रही है। नगरीकरण के कारण शहरी क्षेत्रों में आबादी का विस्तार हुआ है और इसके साथ ही नई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। नगरीय विकास की सफलता इसके संदर्भ में आपातकालीन हो रही है, और इसलिए सामाजिक समावेश एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह शोध पत्र नगरीय विकास में सामाजिक समावेश की आवश्यकता पर विचार करेगा और इसके महत्व को विश्लेषण करेगा। इसके साथ ही, यह शोध पत्र नगरीय विकास के लिए सामाजिक समावेश के प्रमुख माध्यमों, अवसरों, और चुनौतियों पर प्रकाश डालेगा।

नगरीय विकास में सामाजिक समावेश की आवश्यकता उत्कृष्ट महत्व रखती है। सामाजिक समावेश नगरीय विकास के लिए अनिवार्य और आवश्यक आयाम है, क्योंकि यह समाज के सभी वर्गों और समुदायों को शामिल करने और विकास के लाभों को सभी तक पहुंचाने का साधन है। सामाजिक समावेश न केवल नगरीय विकास को सुदृढ़ करता है, बल्कि समाज को भी एकजुट करता है और अधिक न्यायपूर्ण और सहज समाज का निर्माण करने में मदद करता है।

कूटशब्द : नगरीय विकास, सामाजिक समावेश, आयाम, माध्यम, चुनौतियाँ, समाधान

प्रस्तावना

नगरीय क्षेत्रों में विकास के लिए सामाजिक समावेश की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नगरीय विकास का उद्देश्य सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर विकास नहीं होता है, बल्कि इसका मुख्या लक्ष्य समुदायों के विकास में भी होता है। सामाजिक समावेश न केवल विकास को अधिक प्रभावी बनाता है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, उच्चतम जीवनायतन स्तर, और अधिकारिक सहयोग के माध्यम से समुदाय के लोगों को बेहतर जीने की संभावनाएं प्रदान करता है।

Correspondence Author:
Sarwejeet Meena
Lecturer, Department of
Sociology, Govt. College,
Kotra, Udaipur, Rajasthan,
India

नगरीय विकास और सामाजिक समावेश: नगरीय विकास और सामाजिक समावेश दोनों को एक-दूसरे से अभिन्न माना जा सकता है। नगरीय विकास विभिन्न आयामों में होता है जैसे कि आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक आयाम। सामाजिक समावेश विकास के लिए आवश्यकता है, क्योंकि इसके माध्यम से समाज के सभी वर्गों को विकास के लाभों का समान अधिकार प्राप्त होता है। सामाजिक समावेश से सामाजिक विषमताओं को दूर किया जा सकता है और एक समरस्थ समाज के निर्माण में मदद मिलती है।

नगरीय विकास के लिए सामाजिक समावेश के महत्वपूर्ण प्रमुख आयाम:

- 1. शिक्षा:** एक ज्ञानार्जन के माध्यम से सामाजिक समावेश की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिक्षा के साधारण और तकनीकी माध्यम नगरीय विकास को सुदृढ़ करते हैं और अनुशासनशीलता, संपादकीय स्वतंत्रता और न्यायपूर्णता जैसे महत्वपूर्ण मानदंडों को बढ़ावा देते हैं।
- 2. आर्थिक समावेश:** सामाजिक समावेश नगरीय विकास के लिए आर्थिक समावेश का महत्वपूर्ण एक आयाम है। सामाजिक आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए गरीबी की हटाने, रोजगार के अवसर प्रदान करने, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और आय वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए समाज को सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- 3. सामाजिक न्याय:** सामाजिक समावेश के माध्यम से सामाजिक न्याय के संकल्प को प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। गरीब, वंचित, असहाय और अल्पसंख्यक समुदायों को समान अवसर प्राप्त करना चाहिए ताकि सभी लोग समान अधिकारों का लाभ उठा सकें।

सामाजिक न्याय के माध्यम से दिव्यांग लोगों, अत्याचारित और छोटे जातियों को भी सम्मान और समानता मिलनी चाहिए।

सामाजिक समावेश के प्रमुख माध्यम

- 1. संगठन:** गैर सरकारी संगठन, स्थानीय समुदाय संगठन और अभिभावक संगठन जैसे सामाजिक संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन संगठनों द्वारा समुदाय के सदस्यों को संगठित किया जा सकता है और उनकी आवाज को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- 2. सांस्कृतिक प्रोत्साहन:** सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सामूहिक आयोजनों, लोकसंगीत और नृत्य प्रदर्शनों के माध्यम से सामाजिक समावेश को सशक्त बनाया जा सकता है। यह माध्यम सामाजिक संघर्षों को समाप्त करने, एकता की भावना को बढ़ाने और सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने में मदद करता है।

नगरीय विकास में सामाजिक समावेश की चुनौतियाँ, संक्षेप और समाधान: सामाजिक समावेश के लिए नगरीय विकास के लिए कुछ चुनौतियाँ हैं। ये चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

- 1. सामाजिक असंतुलन:** अधिकांश नगरों में सामाजिक असंतुलन होता है, जहाँ गरीबी, जातिवाद, जेंडर और अन्य विभाजन के कारण सामाजिक समावेश में अवरोध होता है। इसका समाधान सामाजिक न्याय के माध्यम से, सशक्तिकरण के माध्यम से और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करके किया जा सकता है।
- 2. संसाधनों की कमी:** कई नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक समावेश के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी होती है, जैसे कि स्कूल, अस्पताल, सामुदायिक केंद्र आदि। इस समस्या का समाधान सार्वजनिक-निजी सहयोग, सरकारी

योजनाएं और विभिन्न संगठनों के माध्यम से किया जा सकता है।

3. **संगठन और प्रशासनिक क्षमता:** सामाजिक समावेश के लिए संगठन और प्रशासनिक क्षमता की आवश्यकता होती है। शहरी प्रशासनों को नगरीय विकास के साथ साथ सामाजिक समावेश के लिए सुनिश्चित करने के लिए सक्षम और संगठित होना चाहिए। संगठनों को सक्षम और स्थायी संसाधनों के साथ संगठित करने की आवश्यकता होती है ताकि सामाजिक परिवर्तन को सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्ष:

नगरीय विकास में सामाजिक समावेश आवश्यक है क्योंकि यह समाज को सुदृढ़ और समरस्थ बनाता है। सामाजिक समावेश के माध्यम से नगरीय क्षेत्रों में सभी लोगों को विकास के लाभों का समान अधिकार प्राप्त होता है और असमानता को कम किया जा सकता है। सामाजिक समावेश नगरीय विकास को द्वारा समृद्धि, न्यायपूर्णता और सामरिक समृद्धि की प्राप्ति में मदद करता है।

सन्दर्भ

1. देसाई, वी. (2009)। भारत में शहरीकरण, सामाजिक समावेशन और शहरी शासन। भारत में शासन और शहरीकरण में (पृ. 29-55)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. ड्रेज़, जे., और खेरा, आर. (2011)। रोजगार गारंटी की लड़ाई. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर त्रैमासिक, 38(1/2), 74-91।
3. मोजर, सी.ओ.एन. (2004)। शहरी सामाजिक नीति और गरीबी में कमी। विश्व विकास, 32(11), 1807-1820।
4. नारायण, डी., पटेल, आर., शैफ्ट, के., रेडेमाकर, ए., और कोच-शुल्टे, एस. (2000)। गरीबों की

आवाज़: क्या कोई हमें सुन सकता है? ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

5. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी)। (2013)। मानव विकास रिपोर्ट 2013। दक्षिण का उदय: एक विविध दुनिया में मानव प्रगति। यूएनडीपी।